शुक्रास्त और विवाह

- **रमा कपूर**

शुक्र विवाह का कारक है और यदि विवाह का कारक ही अस्त हो जाए तो इसका वैवाहिक जीवन पर क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा?

इस विषय पर हमने अपने मार्गदर्शक एवं शोध प्राध्यापक **श्री के. के. जोशी के** निर्देशन में विभिन्न कुंडलियों की जांच करने पर मैंने पाया कि शुक्र का अस्त होना भी वैवाहिक जीवन में तनाव का एक महत्त्वपूर्ण ज्योतिषीय कारण हो सकता है। वैसे तो वैवाहिक जीवन में तनाव के बहुत से ज्योतिषीय कारण हैं जैसे- सप्तम भाव/भावेश, अष्टम भाव/भावेश की अशुभ स्थिति, कारक शुक्र का अत्यधिक पीड़ित होना तथा नवांश कुंडली में भी इन विवाह से संबंधित ग्रहों की स्थिति में सुधार न होना अथवा विवाह के समय अशुभ भाव/भावेशों की दशा-अन्तर्दशा का मिलना।

इन सब तथ्यों के साथ एक और महत्त्वपूर्ण कारण है - **'शुक्र का अस्त'** होना। शुक्र सूर्य के कितने समीप आए कि इसे अस्त माना जाए, इस बारे में भी अनेक धारणाएं हैं। मैंने इसे 03^0 से 20^0 के अंतर तक लिया है। जब शुक्र सूर्य से 3^0 से 20^0 के मध्य है तो इसके कारकत्वों में अशुभता आ जाती है और वैवाहिक जीवन के सुख पर इसकी अशुभता का प्रभाव पड़ता है। इसी विषय पर मैं नीचे कुछ उदाहरण दे रही हूँ:-

उदाहरण-1

यह एक महिला की कुंडली है जिनकी शादी 24 जून, 2007 को हुई। शादी के लगभग छह माह बाद ही पति-पत्नी में आपसी मतभेद शुरू हो गए और मार्च 2008 से यह अलग रहने लगे। तलाक का केस चल रहा है।

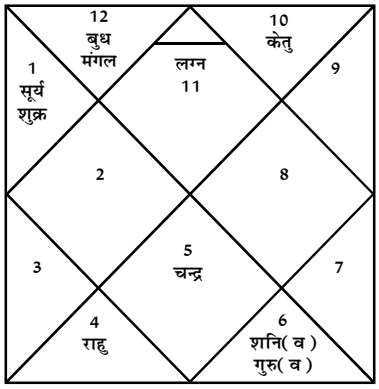

बुध मंगल	सूर्य शुक्र		
लग्न	उदाहरण-1 महिला 15 अप्रैल 1981 04:00:00 बजे मुजफ्फरनगर		राहु
केतु			चन्द्र
			शनि(व) गुरु(व)

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$19^0\ 29'$	$07^0\ 17'$	$12^0\ 23'$	$28^0\ 35'$	$18^0\ 02'$	$09^0\ 27'$	$03^0\ 13'$	$11^0\ 25'$	$14^0\ 14'$
कारक	दारा	भ्रातृ	आत्म	अमात्य	पुत्र	ज्ञाति	मातृ	

कुंडली में सूर्य सप्तमेश है। शुक्र चतुर्थेश/नवमेश है। दोनों की तृतीय भाव में युति है और यह एक ही नवांश में हैं।

उदाहरण-2

प्रस्तुत कुंडली एक महिला की है। इनका विवाह 27 फरवरी, 1990 को हुआ था। लगभग चार वर्ष के बाद मार्च 1994 से इनके दांपत्य जीवन में

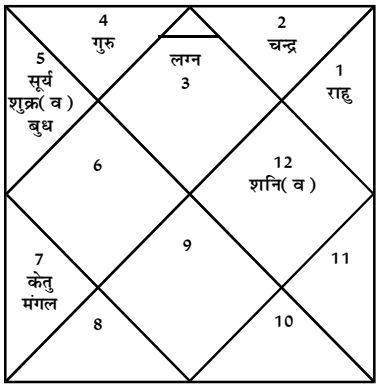

शनि(व)	राहु	चन्द्र	लग्न
	उदाहरण-2 महिला 28 अगस्त 1967 01:35:00 बजे कानपुर		गुरु
			सूर्य शुक्र(व) बुध
		केतु मंगल	

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$15^0\ 06'$	$10^0\ 27'$	$06^0\ 04'$	$28^0\ 09'$	$13^0\ 34'$	$26^0\ 17'$	$13^0\ 43'$	$18^0\ 07'$	$06^0\ 05'$
कारक	ज्ञाति	दारा	आत्म	पुत्र	अमात्य	मातृ	भ्रातृ	

तनाव आरम्भ हो गया। पति का शादी से पहले किसी से प्रेम-संबंध था, जो शादी के बाद भी चलता रहा। जिसके कारण तनाव शुरू हुआ। वर्तमान में दोनों अलग हैं। इस कुंडली में भी सूर्य-शुक्र की युति तृतीय भाव में है।

उदाहरण-3

यह कुंडली एक पुरूष जातक की है। इनका विवाह 15 मई, 1990 को हुआ था। लगभग छह वर्षों के वैवाहिक जीवन जीने के पश्चात् 1996 में यह अलग हो गए। बाद में इन्होंने तलाक ले लिया। कुंडली में सूर्य-शुक्र की युति दूसरे भाव में है। सूर्य और शुक्र दोनों समान अंशों पर स्थित हैं।

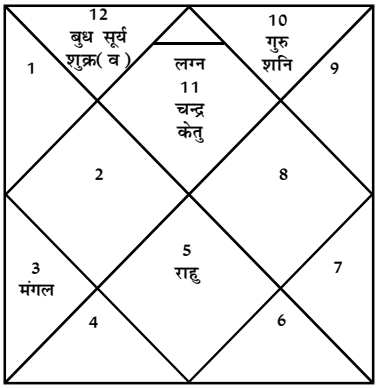

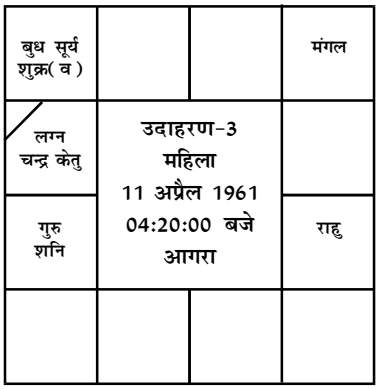

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
21^0 57'	27^0 30'	00^0 54'	24^0 27'	07^0 36'	10^0 49'	27^0 34'	05^0 52'	12^0 05'
कारक	अमात्य	दारा	भ्रातृ	पुत्र	मातृ	आत्म	ज्ञाति	

उदाहरण-4

प्रस्तुत कुंडली एक महिला की है। इनका विवाह 9 मई, 1988 को हुआ। बेटे के जन्म के बाद यह पति से झगड़ा करके अपनी मां के घर चली गईं। पांच वर्ष अलग रहने के पश्चात् यह अपनी माँ को लेकर वापस पति के घर आ गईं।

आइए अब 15 कुंडलियों के माध्यम से कुंडली में शुक्र के अस्त होने से वैवाहिक जीवन पर प्रभाव की जांच करें।

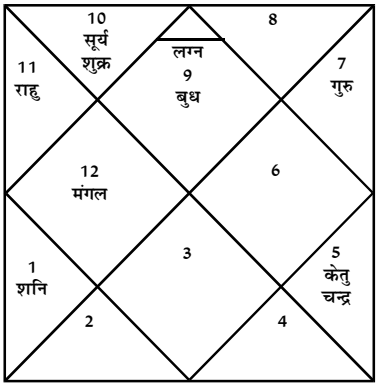

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
10^0 35'	11^0 09'	07^0 46'	06^0 38'	20^0 25'	11^0 29'	11^0 11'	09^0 01'	18^0 43'
कारक	मातृ	ज्ञाति	दारा	आत्म	अमात्य	भ्रातृ	पुत्र	

vLr 'kØ d| Qy					
mnk- l-	tUe fooj.k	nkiR; fLFkfr			
		l|[kh	n|[kh	vfj'V	vfookfgr
1	15.4.1981 / 04:00 / मुजफ्फरनगर		✓		
2	28.8.1979 / 08:55 / दिल्ली		✓		
3	9.9.1971 / 19:43 / दिल्ली		✓		
4	28.8.1967 / 01:35 / कानपुर		✓		
5	11.4.1961 / 04:20 / आगरा		✓		
6	2.11.1958 / 15:30 / दिल्ली		✓		
7	23.8.1971 / 23:15 / दिल्ली	✓			
8	10.11.1958 / 05:25 / दिल्ली	✓			
9	22.9.1980 / 13:37 / पटियाला		✓		
10	23.6.1976 / 10:25 / पांडिचेरी			✓	
11	23.1.1974 / 20:16 / हापुड़			✓	
12	25.1.1970 / 05:30 / होशियारपुर		✓		
13	27.10.1944 / 00:05 / जमशेदपुर		✓		
14	28.1.1970 / 03:45 / गाजियाबाद				✓
15	5.9.1979 / 17:45 / दिल्ली		✓		
	d|y	2	10	2	1